



ys[k%&^महिला सशक्तिकरण विचार-विमर्श**

डॉ० शशि बाला रावत/पंवार

fgU nh&foHkx

jkt dh; LukrdkRrj egkfo |ky; vxLR; efu

ftyk&: ni z kx

नारी तो भाक्ति का रूप है,

dHkh dU; k g§ rks dHkh nsh g§

dHkh npxkz g§ rks dHkh dkyh g§

eu dh etcir g§ ij l guzkhy Hkh g§

og Hkh [okc j [krh g§ mMtus dk]

oks Hkh i fjnks l AA %Loj fpr½

महिलाओं के प्रति आदर भाव और सम्मान प्रकट करने के लिए हर वर्ष 8 मार्च को मनाया जाने वाला अंतराष्ट्रीय महिला दिवस एक विशेष दिन है। हमारे देश में महिलायें आज सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक रूप से अनेक उपलब्धियों हासिल कर रही हैं। देश vk§ l ekt ds mRFkku ea महिलाओं ने हमेंशा से बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। चाहे वह 1857 dh Økfr g§ pks 1947 में मिली आजादी। देश की महिलाओं ने सदैव भारत का गौरव बढ़ाया है। मेरा मानना है कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उन्हें कुशल बनाना अति आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण कs fy, gekjh l jdkj dbz idkj ds vfhk; ku pyk jgh gA izkkue=h mTtoyk ;kstuk] cVh i <kvk] cVh cpkvk] l dU; k l ef) ;kstuk] l [kh ;kstuk] efgyk b&gkV ;kstuk vkfnA ns[kk tk; rks Hkj rh; महिला विद्या, बुद्धि, शौर्य और चरित्र सभी क्षेत्रों में आदर्श रही हैं।

eu defr ds vuq kj ukjh dks dgk x; k g&^; = uk; LRq iqt; Urs jellrs r= nork%** vFkkz~ tggW ukjh dks vknj feyrk g§ ogkW nork cl rs gA ekuk tkrk g§ fd , d ukjh l ekt dk fuekz k djrh g§ ijUrq; g rF; vi us vki ea fdruk l R; g§ fd



आज नारी की दयनीय दशा देखकर पता चल जाता है कि जब परिवार में कन्या का जन्म होता है। तो उसके जन्म पर खुशियाँ नहीं बल्कि मातम-सा छा जाता है। वह नारी जो शिक्षा देने पर अकुंश लगा दिया जाता है। कहा जाता है कि ज्यादा पढ़कर क्या करना

कि वह नारी समाज में एक आदर्श स्थापित करे। वह पुरुषों से बराबरी कर सकें।

अंतराष्ट्रीय; efgyk fnol ds ekds ij ; kuh 8 expz dks nfu; k Hkj ea efgykvka dh



**xkeh.k ukjh dh l eL; k; **

gekjs ikphu xFkka ea dgk x; k gA fd **; = uk; LRq i wT; Urs jplUrs r= nørk**] ; =fLrqu i wT; Urs l okLR=kQyk] fØ; k** ; fn ge viuh l kLdfrd fojkl r dks vk/kfudhdj.k l s tkM+s g\$ तो निश्चित रूप से हम राष्ट्र और समाज की प्रतिष्ठ को vkxs c<k; x\$ ijURq tc ge fL=; ka dh tkx: drk dh ckr djrs g\$. भविष्य में vkxs बढ़ने की शपथ yrs gA exj , d l oky gekjs eu ea T; ka dk R; ka cuk jgrk g\$ og g\$ xkeh.k thou ea ; ki u djus okyh efgyk; a tks jkr %fnu vi us deka es 0; Lr jgrh gA खेतों में सुब से शाम तक काम में लगी रहती हैं, दूर-दूर तक जंगलों में जाकर घास o ydfM+ kWykrh gA ; gka rd vi u&बच्चों की परविश भी ठीक तरह से नहीं कर पाती हैं। हमजो शहरी महिलायें जो गेहूँ, चावल, दाल, तेल आदि खाद्य-पदकFkZ thou ; ki u ds fy, [kkrs gA geus dHkh ; g Hkh l kpk g\$ fd gea ; g dgka l s i klr gks jgk gA ; g xkeh.k efgykvİ को ही मेहनत है। आज जो हम सुन्दर-सुन्दर वस्त्र अपने शरीर में जो धारण djrs gA og Hkh fnu&jkr QDVh ea dke djus okyh efgykvka dh gh nu gA vkt D; k xkeh.k L=h ds fy, fl QZ okV dk vf/kdkj l c dN gA efgyk fnol ij tc cM+s epka ij efgyk jpukRed tu l okn djrh g\$ rks muea ogh efgyk; a gkrh gA tks , yhV वर्ग से संबधित होती हैं। जिनका क्षेत्र शहरी व आधुनिक होता है। vr% xko dh efgykvka dk ifrfuf/kRo ge D; ka Hkny tkrs gA ejk l oky l gh g\$ fd efgyk txr ea ge efgyk fnol ij D; ka mUga NkM+fn; k tkrk gA erkf/kdkj ea cjkcjh dk ntkZ ikdj [kMh fdl ku&etnj fL=; kW D; ka gekjh etfyI ea Hkx ugha ys l drhA bl fy, fd हमारी जैसी 'लैग्वेज' यानी भाषा उनके पास ugha gA gekjs ts k M\$ l x l \$ muds ikl ugha gA vr% ge , d eueksth gkdj mUga ep Hkys u ns ik; A exj bruk gea ; kn



j [kuk pkfg, fd xkeh.k L=h dk thou , d rik gqk gkrk gA ml ds tks vi us vuUko gkrs gA वह जिन्दगी में ढले होते हैं, क्योंकि उसके संघर्ष बड़े विकट होते हैं। जो कुछ vki vkj ge [kks/g i hrs o igurs gA mudks i hnk djus dk gqj muds i kl gkrk gA हमें ग्रामीण महिला को अपना स्त्री-विमर्श सिखाना नहीं है, बल्कि उससे सीखना जरूरी gA

महिलाओं के कौशल-विकास की दिशा में हम सबको गंभीरता में काम करना है। bl dke में कौशल विकास एवं उद्यमशीलता] e=ky;] efgyk , oa cky&fodkl e=ky; vkj ekuo l d kku fodkl e=ky; ijLij l g; kxh gA l Hkh e=ky; ijh&ftEenkjh l s अपनी भूमिका निभा रहे हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति के पास कोई न कोई अद्वितीय कौशल होता है। बस आवश्यकता होती है, कि उस कौशल को पहचानने का एक तंत्र विकसित किया जाय। हमारी यही कोशिश है कि देश की महिलायें अनेक क्षेत्रों में अपना कौशल तलाशते हुए प्रशिक्षित हो जायें और रोजगार के अवसर प्राप्त करें।

l nHkZ xUfK%&

- 1- महिला सशक्तिकरण का विकास-डी0आर0 सचदेव-पृष्ठ । 0&45
- 2- साहित्य और नारी की भूमिका-पवन कुमार मिश्रा-पृष्ठ सं0-66
- 3- efgyk उत्पीड़न-जिम्मेदार कौन - रविन्द्र नाथ मुखर्जी-पृष्ठ सं0 42
- 4- मानव समाज किंग्सले डेविस- पृष्ठ सं0 72